हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या – 10

मुक्तिबोध द्वारा कामायनी की समीक्षा पर प्रकाश डालें।

मुक्तिबोध ने कामायनी के सम्बन्ध में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'कामायनी: एक पुनर्विचार' में चिन्तन किया है कि इस पुस्तक ने कामायनी की समीक्षा का दृष्टिकोण बदलने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुक्तिबोध के अनुसार कामायनी एक फैन्टेसी है। इसमें फैन्टेसी के माध्यम से छायावादी युग की समस्याओं को उठाया गया है, ध्यातव्य है कि यहाँ फैन्टेसी का सिर्फ यह अर्थ नहीं है कि जिस अर्थ में मुक्तिबोध की कविताएँ भी फैन्टेसी होती हैं। मुक्तिबोध की कविताएँ में फैन्टेसी सिर्फ शिल्प के स्तर पर है. जबकि इसके माध्यम से व्यक्त किया जानेवाला कथ्य यथार्थवादी या वस्तुवादी होता है। इसके विपरीत कामायनी अपने मूल दृष्टिकोण में ही फैन्टेसी है क्योंकि यह अपने कथ्य में यथार्थ लोक का अतिक्रमण करके कल्पना लोक में चली जाती है।

कामायनी की मूल समस्या मनु की समस्या है और प्रतीकात्मक रूप में यह प्रसाद की अपनी ही समस्या है।

मनु का स्वभाव एक पूँजीवादी व्यक्ति का स्वभाव है। अपने वैभव और विलास के दिन जाने से चिंतित और परेशान है वह अपनी पराजय को पलायन से ढकना चाहता है यह पलायनवाद दरअसल प्रसाद का ही पलायनवाद है जो छायावादी अन्तर्दृष्टि से उत्पन्न हुआ है श्रद्धा सामंती संस्कृति और मध्ययुगीन चिंतन की प्रतीक है वह कवि का 'सुपर ईगो' है। इसलिए कवि की कुंठित्ता हर नारी को श्रद्धा बना देनी चाहती है इड़ा तर्कवाद और पूँजीवाद व्यवस्था की प्रतीक है अर्थात् वास्तविक जीवन को व्यक्त करती है किन्तु इड़ा को अन्ततः श्रद्धा से कमजोर बनाकर कवि सिद्ध करता है कि उसकी दृष्टि वास्तविक जगत पर नहीं, अध्यात्म और कल्पना के लोक पर केन्द्रित है।

कामायनी के कथानक की समस्या यह है कि प्रसाद ने कथा का ढीला-ढीला आधार लेते हुए भी कथा को स्वभाविक रूप से विकसित होने नहीं दिया, न घटनाओं के स्तर पर, न चरित्रों के स्तर पर। इसके विपरीत रचनाकार ने अपनी जीवन के सारे चिंतन मनन और विश्लेषण को रचना में प्रक्षेपित कर दिया। इस कारण कामायनी प्रबंधात्मक ढाँचे में होते हुए भी प्रबंधात्मकता धारण कर नहीं पायी यह मनोवैज्ञानिक रचना बन गयी है।

कवि के चिन्तन में इतिहास के अंत में मनोविज्ञान और आध्यात्मिक को आरोपित कर दिया जिसके कारण न सिर्फ कथा का ढाँचा बिखर गया बल्कि अपने रचना के अन्त में रहस्यवादी और पलायनवादी हो गई है। ऐतिहासिक समस्या का आध्यात्मिक समाधान खोजने पर यही होता है। इससे किसी व्यक्ति विशेष को भले ही शांति मिल जाए समाज के तनाव शांत नहीं हो पाते।

मुक्तिबोध ने कामायनी को फैन्टेसी कहते हुए कुछ सवाल भी उठाए हैं और कुछ सुझाव भी दिए हैं जिनके होने पर कामायनी एक सार्थकवादी रचना बन सकती है उनका पहला आक्षेप है कि रचना में अशिव और शिव का संघर्ष नहीं कराया गया है बल्कि उन्हें यांत्रिक रूप से जोड़ दिया गया है यदि मनु ने श्रद्धा के साथ अन्याय किया तो श्रद्धा उसी को खोजते हुए क्यों आती है? वह अपने अधिकारों का सवाल क्यों नहीं उठाती है? वह मनु की प्रभुता को चुपचाप क्यों स्वीकार लेती है? इसी प्रकार इड़ा ग्लानिबोध से भरकर क्षमा याचना क्यों करती है? वस्तुतः समरसता पैदा नहीं हुई है बल्कि थोपी गई है।

बेहतर होता की मनु हिमालय पर्वत पर जाने के स्थान पर शासन सूत्र को फिर अपने हाथ में संभालते और इड़ा व श्रद्धा की सहायता से अपनी भूल सुधारते, काम करते, ऐसे समाज का निर्माण करते जहाँ वास्तविक समता होती न कि थोपी हुई समरसता। वह राजा से बदलकर लोक नायक बनते, मानव की शक्तियों को आगे बढ़ाते।

वस्तुतः पारंपरिक समीक्षा-दृष्टियों की तुलना में मुक्तिबोध की समीक्षा कुछ प्रतीत होती है किन्तु यह मानना पड़ता है कि उन्होंने ही कामायनी को आधुनिक समाजशास्त्रीय संदर्भों में परखने की पहली बड़ी कोशिश की।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग
राम नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो०न०- 8292271041

दिनांक
11/11/2020